“शिवानी और उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री जीवन का तुलनात्मक अध्ययन”

“बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ”

हिंदी विषय में पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रबंध की रूप रेखा

शोध निर्देशक:
डॉ. आनंद कुमार राय

शोधार्थी:
सोनी कुमारी
रजि न. JVRII2217

शिक्षा और कार्यप्रणाली संकाय हिंदी विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, (राजस्थान)

२०२३

शोध शीर्षक

शिवानी और उषा प्रियंवदा की उपन्यासों में स्त्री जीवन का तुलनात्मक अध्ययन

शोध प्रस्तावना:

विद्यार्थी समय से हमे हिंदी साहित्य के प्रति रुचि थी। विद्यार्थी समय से ही हमने हिंदी साहित्य को पढ़ना शुरू किया। जिन में, समाज से संबंधित बहुत कुछ पढ़ने को मिला और उसमें विशेष कर स्त्री चेतना स्त्री की उन्नति स्त्री की स्थिति स्त्री की समस्या और उन समस्याओं के निवारण के बारे में विशेषकर अध्ययन किया। तथा उसी दौरान हिंदी साहित्य से एक रिश्ता सा जुड गया। उपन्यास साहित्य के आधुनिक विद्या है, जिसका आरंभ, हम १९ वी शताब्दी से मनाते हैं। हमारे हिंदी साहित्य के लेखक और लेखिकाओ ने अपनी "उपन्यास" और "कहानी" नाटक के माध्यम से उन्होंने हमारे समाज या समाज में रहने वाली परिस्तिथियों को दर्शाया है और उनके माध्यम से समाज को नई दिशा दी है।

विश्वविद्यालय के दौरान हमने कई लेखक लेखिकाओं के कुछ उपन्यास या कहानी पढ़ी हैं, जिनमें से हमें उषा प्रियंवदा और शिवानी जी की कहानियां और उपन्यास बहुत लोकप्रिय लगी। उनके उपन्यासों के माध्यम से ही हमने शोध करने का निर्णय लिया और शोध करने के विषय में हमने नारी को रखा। जैसे-जैसे डिग्री जीवन में प्राप्त होती गई वैस-वैसे विद्या के

माध्यम से अनुसंधान के लिए मेरे मन में उत्सुक्ता बढ़ती गई और उसी समय मैंने निर्णय कर लिया कि मैं जब भी शोध करुंगी तो, शिवानी जी और उषा प्रियंवदा पर ही करुंगी।

तत पश्चतात, मैं विषय चयन संबंधित हेतु आदरणीय "डॉ. आनंद राय" से मिली और उस विषय पर विचार विमर्श किया। विचार विमर्श करने के बाद शिवानी और प्रियंवदा के उपन्यासो में स्त्री जीवन पर तुलनात्मक अध्ययन करने के शोध को मुख्य विषय बना लिया।

शोध के प्रति रुचि:

"साहित्य", समाज का एक दर्पण माना जाता है। साहित्य के माध्यम से ही हम युगो-युगो को देख पा रहे हैं, साहित्य के माध्यम से हम तुलनात्मक अध्ययन कर पा रहे हैं। जीवन में मनुष्य जो कुछ देखता है, सुनता है या फिर अनुभव करता है, वो सब साहित्य के माध्यम से ही कर पाता है।

उपन्यासो के माध्यम से हमने जाना की, स्त्री का स्वरूप शक्ति स्वरूप था और आज भी स्त्री सजग, शक्ति, अर्पण, संपन्न, और आकर्षण व्यक्तित्व का रूप है। नारी उन विषयो पर और तेजी से चमकती नजर आ रही हैं। मैं खुद भी नारी हूँ, पिछले कई सालो के अध्ययन करने के पश्चात नारी जीवन को सूक्ष्म रूप से देखने का प्रयास किया है। स्वयं नारी होने के कारण, नारी की व्रथा को महसूस करने का प्रयास किया है। इस शोध में नारी पर तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है। अपने पसंदीदा विषय पर शोध करने पर मेरी उत्सुक्ता और बढ़ गई है, और उस विषय के शोध को मैं बहुत प्रफुल्लित मन से कर पा रही हूं लेकिन मुझे शोध करने के दौरन काफी समस्याएं हुई, फिर भी मैंने अपने मन को

डगमगाने नहीं दिया और शोध करने के लिए मैं डटी रही और तत्पश्चात् अपने शोध के माध्यम से स्त्री को दर्शाने का प्रयास किया है।

मैंने इस शोध-प्रबंध को निम्नालिखित ६ अध्यायों में विभाजित किया है। अध्ययन की सुचारु सुविधा हेतु उसका संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया है, जो इस प्रकार है:

उपन्यास का उद्भव एवं विकास की पृष्ट भूमि:

- **उपन्यास का जन्म कब हुआ:** उपन्यास हिंदी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है। हिंदी उपन्यास का उदय सन १८७० से माना जाता है।
- **हिंदी उपन्यास का आरंभ कैसे हुआ:** हिंदी उपन्यास का आरम्भ श्रीनिवासदास के 'परीक्षागुरु' (१८८२ ई.) से माना जाता है। हिंदी के आरम्भिक उपन्यास अधिकतर ऐयारी और तिलस्मी किस्म के थे। अनूदित उपन्यासों में पहला सामाजिक उपन्यास भारतेन्दु हरिश्चंद्र का 'पूर्णप्रकाश' और 'चंद्रप्रभा' मराठी उपन्यास का अनुवाद था।
- **हिन्दी का प्रथम उपन्यास:** उपन्यास के लेखक लाला श्रीनिवास दास हैं। 'देवरा नी जेठानी की कहानी' (लेखक - पंडित गौरीदत्त : सन् १८७०)। श्रद्धाराम फिल्लौरी की भाग्यवती को भी हिन्दी के प्रथम उपन्यास होने का श्रेय दिया जाता है। यमुना पर्यटन - रचनाकाल, १८५७, लेखक, बाबा पद्मजी।
- **प्रारम्भिक समय के उपन्यासकारको के उपन्यास:**

- **मेहता लज्जाराम शर्मा** एक प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं, उन्होने 13 उपन्यासों के साथ 23 पुस्तकें लिखी हैं । उनके कुछ उपन्यास - धूर्त रसिकलाल (1899), स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899), बिगडे का सुधार (1907), आदर्श हिंदू (1907) जिन में से उनका प्रसिद्ध उपन्यास "आदर्श हिंदू" था ।
- **राधा कृष्ण दास** - निःसहाय हिंदू (1890) ।
- **देवकी नंदन खत्री** - चंद्रकांता (1891), चंद्रकांता संतति (24 भाग, 1896-1905), काजर की कोठरी, कुसुम कुमारी, नरेंद्र मोहिनी, वीरेंद्र वीर, भूत-नाथ (अधूरा)।
- **किशोरीलाल गोस्वामी** जी हिंदी के उपन्याकारक, नाटककार, एवं सम्पादक थे, उन्होने 60 से अधिक उपन्यास लिखे। उनके कुछ उपन्यास - ज़िंदे की लाश, तिलस्मी शीशमहल, लीलावती व आदर्श सती, मस्तानी, लवंग्लता वाह आदर्श बाला, कुसुम कुमारी, अंगुठी का नगीना (1890) इत्यादि।
- **अयोध्या सिंध उपाध्याय 'हरि औध'** - ठेठ हिंदी का ठाठ (1899), अधखिला फूल (1907) ।

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

- तुलना किसे कहते हैं
- तुलना की परिभाषा

- तुलनात्मक अध्ययन क्या है
- तुलनात्मक अध्ययन की परिभाषा

द्वितीय अध्याय

- शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- शिवानी की कहानी का संग्रह
- शिवानी के उपन्यासो का परिचय
- उषा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- उषा की कहानी का संग्रह
- उषा के उपन्यासो का परिचय

तृतीय अध्याय

- शिवानी व उषा प्रियंवदा के उपन्यासो में स्त्री की प्रतिष्ठा का वर्णन
  - सम्मान
  - स्वाभिमान
  - आत्मसम्मान
  - सामाजिक मान्यता

चतुर्थ अध्याय

- शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री पर आधारित समस्याएँ

- पारिवारिक समस्याएँ
- सामाजिक समस्याएँ
- आर्थिक समस्याएँ
- धार्मिक समस्याएँ
- सांस्कृतिक समस्याएँ
- रजनीतिक समस्याएँ

पंचम अध्याय

- शिवानी एवं उषा जी के साहित्य में भाषिक चेतना का स्वरूप:
  - भाषा अर्थस्वरूप एवं परिभाषाएँ
  - साहित्यिक भाषा एवं साधारण भाषा में अंतर
  - शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के साहित्य में भाषा का स्वरूप

षष्ठम अध्याय

- शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के साहित्य में शिल्प:
  - कहानी
  - उपन्यास
- निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

सहायक ग्रन्थसूची

पत्र-पत्रिकाएँ

शब्द-कोश

प्रथम अध्याय

तुलना किसे कहते हैं:

तुलना एक तकनीक है जो विभिन्न विषयों के बीच तालिकात्मक या सचित्र प्रतिष्ठान का आकलन करने के लिए उपयोग की जाती है। तुलना के माध्यम से, हम दो या अधिक विषयों की मुख्यता या महत्वपूर्णता को जांच सकते हैं, या उनकी विशेषताओं, गुणों, या परिप्रेक्ष्य में अंतर को पहचान सकते हैं। तुलना विधि के द्वारा, हम विभिन्न विषयों के बीच समानांतर तालिकाओं, बार-चार्ट, लाइन-चार्ट, पाइ-चार्ट, या अन्य ग्राफिकल प्रतिष्ठान का निर्माण कर सकते हैं। इस तरह, तुलना हमें विभिन्न विषयों के बीच संबंधों, अंतरों और पैटर्नों को समझने में मदद करती है।

तुलना की परिभाषा

प्रसिद्ध विश्वकोशकार वेबस्टर के अनुसार - "दो या दो से अधिक वस्तुओं के समान एवं असमान तत्वों को ज्ञात करने के लिए उन्हें साथ रखकर परिक्षित करना। दो वस्तुओं की

असमानता की मात्रा का पता लगाने के लिए भी तुलना की जाती है। दो वस्तुओं के साम्य-वैषम्य की निष्पक्ष जाँच के लिए तथा निष्कर्ष प्राप्ति के लिए भी तुलना की जाती है।''

रेने वेलेक पासनेट के अनुसार, ''साहित्यिक विकास के सामान्य सिद्धांतो का अध्ययन निश्चय ही तुलनात्मक साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है।''

पैरिस जर्मन स्कूल के अनुसार, ''तुलनात्मक साहित्य विविध साहित्यों के पारस्परिक संबंधों का अध्ययन है अथवा अंतर्राष्ट्रिय साहित्यिक संबंधो का इतिहास है या फिर वह साहित्येतिहास की एक शाखा है।''

क्लाइव स्टाक के अनुसार, ''तुलनात्मक साहित्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्यों अथवा उसके संक्षिप्त घटकों की साहित्यिक तुलना होती है और यही उसका आधार तत्त्व है।''

तुलनात्मक अध्ययन क्या है:

तुलना शब्द, तुल धातु से भाव वचन संज्ञा के रूप में निर्मित हुआ है। तुलना शब्द का अर्थ है बराबरी तौल जाना। तुलना शब्दों को स्पस्ट करते हुए "डॉ. नागेंद्र" कहते हैं, तुलनात्मक साहित्य जैसे कि उनके नाम से स्पस्ट है, साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत किया, वह नाम पद वास्तव में एक प्रकार का न्यून पदीय प्रयोग है और साहित्य का वाचक है।

शिवानी और उषा प्रियंवदा जी की समस्त उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन के सुखः दुख, निराश एवं जीवन संघर्ष प्रति धारणा है। स्त्रियों की दशा को लेकर नई पुरानी पीढ़ी के टकराव का चित्रण किया गया है। उषा और शिवानी जी की कहानियाँ भारतीय नारी की अ:सहयोग और मजबूरियों को उजागर करती है। नारी होने के कारण वे नारी की पीडा को समझती भी हैं, और उसे शशक्त, कथानक भाषा शैली में व्यक्त करने में भी सक्षम है। उषा एवं शिवानी जी का अधिकांश लेखन नारी विमर्श प्रति आधार है। उनहोने भारतीय नारी की अ:सहाय स्थिति एवं मूक, सहनशीलता का चित्रण बखूबी किया है।

तुलनात्मक अध्ययन की परिभाषा:

गिन्सबर्ग लिखे हैं - तुलनात्मक पद्दतियाँ केवल कुछ घटनाओ की तुलना करना ही नहीं है, लेकिन तुलना के द्वारा उनकी व्याख्या करना भी है।

हर्षकोविट्स का कहना है कि – तुलनात्मक पद्दति के अंतरगत व्यक्ति के बीच पाए जाने वाले स्वरूप की तुलाना के द्वारा मानवीय संस्थाओ तथा विश्वासो के विकास पूर्ण क्रम को स्पष्टिकरण किया जाता है।

तुलनात्मक पद्दति:

समाज विज्ञान में सामाजिक घटनाओ के अध्ययन हेतु तुलनात्मक पद्दति का प्रयोग वर्तमान में बहुत हुआ है। तुलनात्मक पद्दति के द्वारा एक ही समूह अथवा समाज में घटने वाली समान प्रकृति की सामाजिक घटनाओ या समस्याओ का परस्पर तुलना की जाती है, और उनकी समानता व अ:समानता को ज्ञात किया जाता है। एक ही समाज में विभिन्न समय

में घटने वाली घटनाओ अथवा विभिन्न समाजों में विभिन्न स्थानों पर घटने वाली समान प्रकृति की घटनाओ का तुलनात्मक अध्ययन भी इस विधि के द्वारा किया जाता है।

तुलनात्मक पद्दति का प्रयोग:

तुलनात्मक पद्दति का प्रयोग, समाज शास्त्र और मानव शास्त्र में अनेक विवादों ने किया है। सामाजिक और सांस्कृतिक मानव शास्त्रों ने सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को जानने के लिए इसका प्रयोग किया है।

द्वितीय अध्याय

शिवानी और उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व:

शिवानी जी:

शिवानी जी का जन्म अत्यंत, समृद्धि, सु:संस्कृत एवं उच्च वर्गीय परिवार में १७ अक्टूबर १९२३ को “राजकोट”, “गुजरात” में प्रात: काल के समय में हुआ था। शिवानी का वास्तविक पूरा नाम “श्रीमति गोरापंथ शिवानी” है। उन्होने अपने नाम को सार्थक, जलधर, सेन की पंक्तियो के अनुरूप किया। शिवानी, कुमाउनी हैं, फिर भी उनका जन्म वहां न होने का खेद व्यक्त करते हुए लिखती हैं, “कुमाउनी होने पर भी विधाता ने मुझे कुमाउनी में जन्म लेने के सौभाग्य से वंचित रखा”। आगे वह लिखती हैं - मेरा जन्म हुआ सौराष्ट्र में और उसी स्नेही

मातृवत धैर्य मां की छत्र छाया मेरे शैशव पर बनी रही, किंतु किशोरी में मुझे एक बार फिर अपनी बिछड़ी जन्म भूमि मिल गई।

माता:

शिवानी की मां का नाम “लीलावती पांडेय” था। वह धर्म परायण, संस्कारशील, साहित्यभिरुचि, संपन्न विशुद्धि नारी थी। उनके घर में हिंदी, गुजराती और संस्कृत पुस्तकों का अत्यंत समृद्ध पुस्तकालय था।

पिता:

शिवानी के पिता का नाम “अश्विन नोकु कुमार पांडेय” था। वह राजकोट के राजकुमार कॉलेज में प्रोफेसर थे, कॉलेज कलेक्टर के कमिश्नरो से उनकी दोस्ती थी।

शिक्षा:

शिवानी जी ने पश्चिम बंगाल के “शन्तिनिकेतन” से बी.ए. किया था। साहित्य और संगीत के प्रति एक गहरा रुझान शिवानी जी को अपने माता-पिता से ही मिला था। शिवानी ने 1994 में पुणे विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक विजेता के रूप में अपने इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

विवाह:

शिवानी जब बी.ए. में थी, तब उनके माता-पिता ने उनका विवाह तय कर दिया था। शिवानी अपने होने वाले पति को पहले कभी देखी भी नहीं थी । इतना होते हुए भी, अपने पति के बारे में वह कहती हैं कि “अंतिम सास तक मुझे संतोष रहा की अगर में लव मैरिज भी करती तो भी, इतने अच्छे पति मुझे नहीं मिलते”।

लेखन कार:

शिवानी की लेखन की शुरुआत 9वी कक्षा से ही हुई थी। "विश्वभारती" पत्रिका में छोटी-छोटी घरेलू बातें लिखने लगी। “बंगाल” की "नटखट पत्रिका" में उनकी पहली कहाँनी छपी। १९५१ में "सिंदूरी" हिंदी में पहली कहाँनी थी। “धर्मयुग” जमीदार की मृत्यु छपी थी । शिवानी ने आज तक विविध विद्याओं में लिखकर हिन्दी साहित्य की सेवा की है ।

शिवानी की मृत्यु आँखो की बीमारी, स्वस्थ गिरता रहा, अंत में शिवानी का देहांत हो गया। आज तन से शिवानी जी इस जगत में नहीं हैं मगर अपनी अमर रचना के कारण उन्हें सदा याद किया जाएगा।

कहानी का संग्रह:

1. पुष्पहार (१९७१)

2. मेरी प्रिय कहानियाँ (१९८१)

3. टोला (१९८२)

4. क्यों (१९८३)

5. लाल हवेली (१९८८)

6. करिए छिमा (१९८९)

7. मेरा भाई (१९८९)

उपन्यासो का परिचय:

१. मायापुरी (१९५७)

२. १४ फेरे (१९६०)

३. कृष्ण कली (१९६२)

४. भैरवी (१९६९)

५. शमशान चंपा (१९७२)

६. सुरंगमा (१९७२)

७. चल खुर्शरू घर अपने (१९८२)

८. अतिथि (१९८७)

९. कालिंदी (१९९०)

मायापुरी:

यह उपन्यास भारतीय सामाजिक संस्कृति और उसके प्रतिबिंबों पर आधारित है। इस उपन्यास में शिवानी ने "उत्तर प्रदेश" के एक छोटे गाँव "मायापुरी" की जीवनशैली, सामाजिक व्यवस्था और संघर्षों को दर्शाया है। इसमें प्राकृतिक सौंदर्य, ग्रामीण जीवन, जाति-पाति संबंध, महिला सशक्तिकरण, और सामाजिक बदलाव के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

शमशान चंपा:

शमशान चंपा आप की एक मार्मिक कहानी है, जिसमे किरदार "डॉ. चंपा" जी की जीवन भर अपने पेशे के माध्यम से लोगों की सेवा करती रही, परंतु अपने जीवन के एकाकी पन को कभी भर नहीं पायी।

चल खुर्शरू घर अपने:

यह कहानी है कुमुद की, जिसे बिगडैल भाई-बहनों ने और आर्थिक पारिवारिक परिस्थियों ने "सुंदूर बंगाल" जाकर एक "राजासाहब" की मानसिक रूप से बीमार पत्नी की परिचर्या का दूरूह भार थमा दिया।

अतिथि:

शिवानी जी के उपन्यास "अतिथि" का कथानक शुरुआत में किसी बॉलीवुड फिल्म का भ्रम देते हैं, लेकिन धीरे-धीरे इसकी प्याजी परते खुलती हैं और पाठक का मन ऊन के गोले

सा पात्रो के साथ बनता चला जाता है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र “जया सरल” और “स्वाभिमानी” लड़की है। “सरकार, मास्टर की बेटी” आत्मा सम्मान को सरोपारी मानती है।

कालिंदी:

कालिंदी, शिवानी जी की मात्र भूमि “अल्मोड़ा” और उस आँचल के गाँव की मिट्टी बयान की गंध से भरी कालिंदी की व्यथा-कथा भारत की उन सैकडो लड़कियों की महागाथा है।

उषा प्रियंवदा:

उषा प्रियंवदा का जन्म १४ दिसम्बर १९३० को “कानपुर” में हुआ था। कानपुर के यू.पी. “सक्सेना कायस्थ” के एक प्रतिष्ठित और शिक्षित परिवार में हुआ था। उषा जी के पिता का देहांत इनके बचपन में ही हो गया था। इनकी माता का नाम “प्रियंवदा” था, जो बड़ी ही कवित्वपूर्ण और ध्वनि रंजक थी, लेकिन इनकी माता ने अपनी बेटी का नाम छोटा ही रखा “उषा”। उषा जी ने "कल्पना पत्रिका" में प्रकाशित अपनी "कहाँनी पूर्ति" में अपने नाम के साथ प्रियंवदा नाम भी जोड़ा। ६ वर्ष की आयु में उषा जी अपनी माता के साथ अपने चाचा के घर आकार रही, उनके चाचा कानपुर के निवासी थे। परंतु वे उस घर का हिस्सा नहीं थे, क्योंकि घर उनके पिता के छोटे भाई की पत्नी को दिया गया था, क्योंकि वह विधवा थी, और मेरी माँ को कुछ भी नहीं दिया गया, जब की वो भी विधवा थी, लेकिन नहीं देने का मकसद ये था कि, उनके पास लड़की थी। समाज की इस क्रूरता का प्रभाव उनके मन मस्तिक पर गहरी छाप छोड़ा, जिस वजह से वो नारी के प्रति जागरुक हुई।

लम्बे समय तक “अमेरिका” में प्रवास बिताया। वर्तमन समय में स्वतंत्र लेखक का कार्य कर रही हैं। उषा प्रियंवदा ने अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त करने के बाद, “श्री राम कॉलेज”, दिल्ली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, शिक्षा विश्वविद्यालय, दवा में दक्षिण एशिया विभाग में अध्ययन के कार्य से जुडी रही। उच्च शिक्षा उषा जी ने इलाहाबाद में की। “इलाहाबाद विश्वविद्यालय”, अंग्रेजी विषय में पी.एच.डी. किया। नई कहानी के आंदोलन के साथ उभर कर आने वाली उषा, महिला कथाकारो में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। आज ये हिंदी साहित्य का गौरव बनी हुई हैं। वे अपनी हर रचना में घटना को बारीकी से वर्णन करती हैं।

अपनी रचनाओं के माध्यम से उषा जी ने समाज की हर पहलू को बड़े सार्थक ढंग से कथाकारो के सामने रखा है।

कहानी का संग्रह:

१. वनवास

२. फिर वसंत आया

३. कितना बड़ा झूठा

४. एक कोई दूसरा

५. शून्य

६. जिंदगी और गुलाब के फूल

७. मेरी प्रिय कहानियाँ

८. संपूर्ण कहानियाँ

९. एक कोई दूसरा

उपन्यासो का परिचय:

१. अंतवर्षि

२. भया कबीर उदास

३. पचपन खंभे लाल दीवारें

४. शेष यात्रा

५. रुकेगी नहीं राधिका

अंतवर्षि:

उषा प्रियंवदा का यह उपन्यास उन तमाम भारतीय परिवारों की जीवन-शैली का विश्लेषण करता है। इनमे उन भारतीय परिवार के बारे में बताया गया है, जो बेहतर जीवन जीने की तलाश में प्रवासी हो जाते हैं, और जिसकी वजह से संघर्ष अतह मोह भंग का सिलसिला शुरू करते हैं, इसका चित्रण किया गया है।

भया कबीर उदास:

"भया कबीर उदास" कैंसर पीडित युवती "लीला" की संघर्षमय जिंदगी की ऐसी दास्तान हैं, जो उसे पूरी तरीके से तोड़ कर रख देती हैं, लेकिन अंत में मौत को मात देकर नई जिंदगी जीने के बारे में बताया गया है।

पचपन खंभे लाल दीवारें:

ये उपन्यास उषा जी के श्रेष्ठ उपन्यासो में से एक है। इस में उषा जी एक लड़की के बारे में चित्रण करती हैं, जो अपने परिवार के अवश्यकताओ को पूरा करने के लिए अपने सपनों का गला घोट देती हैं।

शेष यात्रा:

उच्च मध्य वर्गीय प्रवासी भारतीय समाज यहाँ अपने तमं अंत विरोध, व्यामहो और कुंठाओं के साथ मौजूद है। इस उपन्यास नायिका ने साहस और संघर्ष के साथ अपनी दरुध नियति को बदलने का अथक प्रयास किया है।

रुकेगी नहीं राधिका:

"रुकेगी नहीं राधिका", उषा प्रियंवदा का दूसरा उपन्यास है। यह उपन्यास पहले धारावाहिक के रूप में भी छपा था, और सही अर्थों में आधुनिक बोध का एक श्रेष्ठ उपन्यास है। यह उपन्यास प्रवासी भारतीय के प्रति आधारित है, जो कुछ वर्षो या कई वर्षो तक विदेश में रहने के बाद पुन:घर "भारत" आना चहती हैं। लेकिन, जब वह घर वापस आती है, तब यहाँ उनके लिये कोई स्थान बचा नहीं रहता है। ये लेखिका, "राधिका" के माध्यम से स्पस्ट करती हैं।

तृतीय अध्याय

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के उपन्यासो में स्त्री की प्रतिष्ठा का वर्णन:

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में रहने वाली महिलाओं की प्रतिष्ठा को दर्शया है। उन्हें बताया है कि समाज कुंठित सोच की वजह से नारी के विकास की वृद्धि को हमेशा समाज बाँध रहा है और नारी को एक दायरे में बाँध कर रखा है। इनके उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास, और अकेले पन की स्थिति को उषा जी ने अपने कलम से साजी प्रस्तुति को प्रदान की है।

शिवानी जी ने भी नारी के प्रति, शोषण, मानसिक तनाव, नारी का स्थान और नारी के अस्तित्व को दर्शाया है।

नारी अस्मिता में समाज की संवेदना व यथार्थ धरातल पर उसका व्यवहार समाज के दोगले चरित्र को प्रकट करता है। ये सभ्यता दोनो उपन्यासकारो ने अपने साहित्य के माध्यम से दर्शया है, जो पढ़ने वाले को अपनी तरफ प्रभावित करता है। उषा जी और शिवानी जी ने स्त्री की व्रथा को बहुत सहज व सजग तरीके से प्रस्तुति किया है जैसे, उषा जी की " पचपन खंभे लाल दीवारें " में वह स्त्री अपनी सारी इच्छाओं का गला घोट कर परिवार के लिए सदा खड़ी रही। उन्होंने अपनी-अपनी उपन्यासों में हर समस्या का पतन करते हुए आगे बढ़ती दिखाती गई।

सम्मान:

स्त्री की प्रतिष्ठा का सबसे महत्वपूर्ण आधार सम्मान है। यह उसे स्वीकार्यता, मान्यता और आदर्शता के साथ संपन्न बनाता है। समाज में स्त्री को सम्मानित करना, उसके योगदान को महत्वपूर्ण मानना और उसे समान अवसरों की पहचान देना उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

स्वाभिमान:

स्त्री की प्रतिष्ठा स्वाभिमान के साथ जुड़ी होती है। स्वाभिमान स्त्री को उसकी अहमियत और स्वतंत्रता के प्रतीक बनाता है। यह उसे खुद को सम्मानित महसूस करने और अपने विचारों, अभिलाषाओं, और सपनों की प्राथमिकता को स्थापित करने में मदद करता है।

आत्मसम्मान:

स्त्री की प्रतिष्ठा आत्मसम्मान के साथ जुड़ी होती है। यह उसे खुद के प्रति स्नेह, संयम, और आत्मविश्वास की अनुभूति कराती है। स्त्री की प्रतिष्ठा उसे अपनी क्षमताओं, योग्यताओं, और सामर्थ्य के प्रति आत्मविश्वास देती है, जिससे वह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो सकती है।

सामाजिक मान्यता:

स्त्री की प्रतिष्ठा उसे सामाजिक मान्यता की स्थिति प्रदान करती है। यह सामाजिक संरचना में स्त्री को आदर्शनीय बनाती है और उसे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका देती है। स्त्री

की प्रतिष्ठा सामाजिक समुदाय में उसके विचारों, दयालुता, और सेवाभाव की मान्यता करती है।

चतुर्थ अध्याय

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री पर आधारित समस्याएँ:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, साहित्य समाज का दर्पण है, उसमे उपन्यास, साहित्य व विधा है, जिसमें सारा समाज दर्पण के सामने पड़ने वाली परछाइयों के समान, दृष्टि गोचर होता है । समाज के यथार्थ रूप का चित्रण, उपन्यासकारो की एक लंबी परंपरा है , जो सामाजिक जीवन की यथार्थ को बना कर चले हैं। ऐसे उपन्यासकारो की श्रेणी में अनेक महिलाएं हैं जिन में शिवानी जी और उषा प्रियंवदा जी प्रमुख लेखिकाएं हैं। इन लेखिकाओं का सृजन - संसार व्यक्ति, परिवार, समाज, जाति, धर्म, काल, संस्कृति, अर्थ, राजनीति, और स्त्री से जुडी अनेक समयाओं पर दृष्टि डालता चला है। लेखिकाएं की मुख्य उपन्यासों में स्त्री - समस्या प्रमुख है, साथ ही साथ अर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, समस्याऐ भी अनुस्चित नहीं रही।

उषा प्रियंवदा की कथा साहित्य में भी चित्रित है, विभिन्न वर्गां की समयाएं पर विचार करने से पूर्व संशोधन में समस्या के स्वरूप पर स्त्री विचार- विमर्श करना, प्रथम स्थान पर आता है।

पारिवारिक समस्याएँ

कुछ परंपरागत समाजों में स्त्री को घरेलू कामों, सेवाओं, और परिवार की देखभाल का जिम्मा सौंपा जाता है, जिससे उनके व्यक्तिगत विकास और स्वतंत्रता पर प्रतिबंध होता है।

इसके बारे में भी शिवानी एवं उषा जी ने उपन्यासों में दर्शाया है।

सामाजिक समस्याएँ

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा ने समाज में जो नारी की समस्याएं हैं, उसका उजागर किया है। महिलाओं की समस्याएँ अनेक वर्षों से चली आ रही है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक महिलाएँ किसी न किसी रूप में शोषण का शिकार होती रही हैं। जैसे दामपत्य जीवन, रखैल प्रथा, वास्य जीवन, अवैध मातृतत्व, व्यवहारिक समस्या, प्रेम समस्या इस्से कोई भी समाज अछूता नहीं है।

आर्थिक समस्याएँ

धन के अनुभव के कारण ही वह दूसरो पर आश्रित रहने की वजह से ही नारी शोषण का कारण रही है। वह गृहस्वामिनी होते हुए भी पुरुष पर निर्भर बन कर रह जाती है। उसे अपनी किसी छोटी सी छोटी आवश्यकता की पूर्ति के लिए पुरुष के सामने हाथ फेलना पड़ता है और उस पर निर्भर रहना पड़ता है। ये भी स्त्री की उन्नति की सबसे बड़ी बाधा थी। इस विडंबना को भी दोनो ने अपने उपन्यासों में दर्शाया है।

धार्मिक समस्याएँ

धर्म से संबंधित जाति-पाती की भावना, ऊंच-नीच की भावना, धर्म मनुष्य के भीतर नीहित दोष का विकास है। यह जीवन का परम स्वाभाविक तत्व है। इनसे जुडी और भी समस्याओं का उल्लेख शिवानी एवं उषा जी ने अपने उपन्यासों में दर्शाया है।

सांस्कृतिक समस्याएँ

सांस्कृतिक परिवेश जो आज वह पूर्व में नारी जीवन पर अनेक प्रतिबन्ध लगता है, इसका चित्रण भी दोनो उपन्यासकारो ने किया है।

रजनीतिक समस्याएँ

स्त्री के लिए सामाजिक और राजनीतिक प्रतिबंध, कुछ समाजों और राष्ट्रों में, स्त्री को सामाजिक और राजनीतिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है। ये प्रतिबंध स्त्री के शिक्षा, रोजगार, स्वतंत्रता और सामाजिक पहचान में असमानता उत्पन्न करते हैं।

हमारे दैनिक जीवन में राजनीति की व्याप्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि, विज्ञान, साहित्य, धर्म, उद्योग, आदि क्षेत्रो तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वासनीय संबंधों में राजनीति की पैठ हो गई है और हर रूप में राजनीति पाई जाती है, जैसे शिक्षा में राजनीति, कला में राजनीति, धर्म में राजनीति, प्रशासन में राजनीति, इस वजह से अनेक राजनीतिक समस्याएं खड़ी होती हैं। शिवानी जी और उषा जी ने अपने उपन्यासो में काई राजनीतिक मुद्दों का चित्रण किया है।

पंचम अध्याय

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा जी के साहित्य में भाषिक चेतना का स्वरूप:

इस अध्याय के अंतरगत, शिवानी एवं उषा की भाषा शैली में अंग्रेजी, संस्कृति, हिंदी तथा अन्य भाषाओं का इस्तेमाल किया है। उनके शब्दों के सामाजिक प्रयोग से लेखिकाओं ने साहित्य की भाषा में भावात्मक, विपरितात्मक व व्यंगात्मक है। उनके उपन्यासों में विवरण शैली के दर्शन होते हैं, तो कहानियों में भावात्मक तथा व्यंग पद्धति है। इस प्रकार उनकी शैली वर्ण-विषय के सर्वधा अनुकूल है।

भाषा अर्थस्वरूप एवं परिभाषाएँ:

भाषा को लोगों के बीच संवाद करने और विचारों, भावनाओं, अनुभवों और ज्ञान को साझा करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला माध्यम कहा जाता है।

भाषा का स्वरूप मानवीय संवाद के लिए एक माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य विचारों, ज्ञान, अनुभव, भावनाएं, और जानकारी को साझा करता है। भाषा शब्दों, वाक्यों, भाषाई नियमों, व्याकरण, व्यंजक, संकेत और सार्थक संबंधों का उपयोग करके मानवीय संवाद को समर्थित करती है। भाषा के स्वरूप में शब्दों की व्याख्या, अर्थ, ध्वनि, उच्चारण, अकार्थकता, वाक्य-रचना, व्याकरणिक नियम, भाषाई संकेत आदि के अध्ययन सम्मिलित होते हैं।

साहित्यिक भाषा एवं साधारण भाषा में अंतर:

- **प्रयोग**: साहित्यिक भाषा का प्रयोग विभिन्न कला, साहित्य और रचनात्मक आदि कार्यों के लिए होता है। इसमें सुंदरता, कवित्ता, चमत्कार, रस, और विभिन्न रंगों की उपयोगिता होती है। साधारण भाषा उद्योग, व्यापार, संचार, और दैनिक जीवन में समान्य वार्तालाप के लिए प्रयोग होती है। इसमें सीधापन, स्पष्टता, और सामान्य व्यवहारिकता की आवश्यकता होती है।

- **व्याकरण**: साहित्यिक भाषा में व्याकरण का उपयोग भाषा के रंगीनता और कवित्ता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसमें शब्दों का उपयोग, वाक्यों की रचना और वाक्य प्रवृत्तियों का विस्तारित अध्ययन होता है। साधारण भाषा में व्याकरण उद्योग, व्यापार, और संचार की सही और स्पष्ट व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण होता है।

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के साहित्य में भाषा का स्वरूप:

शिवानी के साहित्य में भाषा का स्वरूप साहित्यिक और व्यावहारिक दोनों पहलुओं को समाहित करता है। उनकी रचनाएं अपने विचारों और भावनाओं को सुंदरता, कवित्ता, और प्रभावशीलता के साथ व्यक्त करने के लिए साहित्यिक भाषा के आधार पर बनी होती हैं। उनकी कविताएं, कहानियाँ, और निबंध अपनी अद्वितीय भाषा शैली के लिए प्रसिद्ध हैं।

शिवानी की रचनाओं में भाषा उद्भवन, रस, अलंकार, और शब्द-चित्रण जैसी कला का प्रयोग देखा जा सकता है। उनकी लेखनी विविधता, उत्कृष्टता और गहराई को दर्शाती है।

उन्होंने भाषा को एक साधन के रूप में उपयोग किया है जिससे वे अपनी भावनाओं, समस्याओं, और दृष्टिकोण को व्यक्त कर सकें।

उनकी भाषा सुंदर, सरल, और सामर्थ्यपूर्ण होती है। इसके अलावा, उनकी रचनाएं विशेष रूप से महिला समस्याओं, सामाजिक विरोध, और मानवीय दर्द के विषय में भावनात्मकता को उजागर करती हैं

षष्ठम अध्याय

शिवानी एवं उषा प्रियंवदा के साहित्य में शिल्प:

शिल्प जीवन का महत्वपूर्ण एक अंग है, जिससे सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक विकास होता है। इसके साथ ही शिल्प कला और अभिव्यक्ति का माध्यम भी है जो साहित्यिक और विसुअल कला के साथ मिलकर सामरिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति का समर्थन करता है।

शिल्प का सार्द्दिक अर्थ है, किसी चीज का बनाना या रचने के ढंग अथव तरीका। सरल भाषा में यदी कहे तो शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करना अथवा कारीगरी से है।

कहानी:

✓ मायापुरी

- ✓ 14 फेरे
- ✓ कृष्ण कली
- ✓ वनवास
- ✓ धिर वसंत आया
- ✓ धकतना बडा झूठा

उपन्यास:

- ✓ कृष्ण कली
- ✓ भैरवी
- ✓ सुरंगमा
- ✓ शेष यात्रा
- ✓ रुकेगी नहीं राधिका

निष्कर्ष:

नारी की दयनिय और दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की समाप्ति आज के ९ जागरण के युग में एक चुनौती बनकर सामने खड़ी है। आज का युग स्वतंत्रता और समानता का युग है, फिर भी नारी अपनी दीनवस्था में विविध, मानसिक संघर्ष में डूबी हुई हैं।

आधुनिक युग में देश की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्तिथियों में उल्लेखनीय परिवर्तन आई है। आधुनिक समाज में नारी अपने ऊपर लम्बे समय से लगाये

गये विवेचना को खंडित किया है। आज हर क्षेत्र में नारी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है।

उषा और शिवानी जी के उपन्यास सामाजिक अभिव्यक्त का साक्षात माध्यम है। इनके उपन्यास पुरानी विचारिक धारणाओं को नवीन धारणाओं की ओर ले जाने में सक्षम है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

१. शिवानी - कृष्णकली-भारतीय-ज्ञानपीठ, १७ इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली, इक्कीसवाँ संस्करण, २००७.

२. शिवानी - अतिथि-राधाकृष्ण-प्रकाशन प्रा. लि. ७/३१, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पहला संस्करण, २००६, चौथी आवृत्ति २०१०.

३. शिवानी - सुरंगमा- राधाकृष्ण-प्रकाशन प्रा. लि. ७/३१, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पहला संस्करण, २००६, चौथी आवृत्ति २०१०.

४. शिवानी - कालिंदी-राधा कृष्ण-प्रकाशन प्रा। लिमिटेड ७/३१, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौथी आवृत्ति २०११.

५. उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें

६. उषा प्रियंवदा - जिंदगी और गुलाब के फूल - अणुक्रमिका

७. शिवानी -१४ फेरे - हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, नवीन संस्करण १९९७.

८. शिवानी - मायापुरी - हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, नवीन संस्करण १९९७.

९. शिवानी-शमशान चंपा- राधा कृष्ण-प्रकाशन प्रा. लि. ७/३१, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौथी आवृत्ति २०११.

१०. शिवानी-भैरवी- राधा कृष्ण-प्रकाशन प्रा. लि. ७/३१, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौथी आवृत्ति २०११.

११. शिवानी-चल खुसरो घर अपने-श्रावस्ती विहार, दिल्ली, संस्करण १९९१.

१२. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में व्यक्त नारी चेतना, शारदा बी. पटेल, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, संस्करण २००८.

१३. शिवानी - एक थी रामरती -हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८६.

१४. शिवानी - बिन्नू -हिंदी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७८.

१५. मन्नू भंडारी का रचनात्मक अवदान, सुधा अरोड़ा, २०१२.

१६. क्रांतिकारी यशपाल - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९७९.

१७. विजयन पी.वी. - प्रेमचंद, साहित्य और संवेदना, जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.), २००५.

१८. शिवानी - अलविदा हर हर गंगे - राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली संस्करण, १९८७.

१९. साहित्य में नारी योगदान - उमा अर्पिता, २०१५.

२०. एक इंच मुस्कान में नारी मुक्ति के स्वर - डॉ. विनिता चौरसिया, २०१४.

सहायक ग्रन्थसूची

१. मन्नू भंडारी का रचनात्मक अवदान, सुधा अरोड़ा, २०१२.

२. क्रांतिकारी यशपाल - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९७९.

३. विजयन पी.वी. - प्रेमचंद, साहित्य और संवेदना, जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा (उ.प्र.), २००५.

४. मुंशी प्रेमचंद, कर्मभूमि, हंसराज प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७२.

५. मन्नू भंडारी का रचनात्मक अवदान - सुधा अरोड़ा २०१२.

६. उपनिवेश में स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताए, प्रभा खेतान २००९.

७. नारी विमर्श के संदर्भ में मन्नूभंडारी का लेखन, २०१३ सचिन कुमार.

८. हिंदी साहित्य में महानगरीय नारी जीवन - डॉ. बाबा साहेब को काटे २०१३.

९. नारी अस्मिता का विमर्श तथा प्रभा खैतान के उपन्यास छिन्नमस्ता के सन्दर्भ में - कंचन भणावत २०१७.

१०. स्त्री मुक्ति और अस्मिता की पहचान - डॉ. प्राची सिंह २०१७.

पत्र-पत्रिकाएँ

१. प्रभाव माजरा (मधुमति) - मासिक पत्रिका

२. प्रयाग समाचार

३. हिन्दुस्तान दैनिक

४. उपन्यास – मासिक

५. प्रताप साप्ताहिक

६. जागरण – साप्ताहिक

७. कहानी, नाई कहानियाँ – उपन्यास

८. सरिता (पत्रिका)

९. सारस सलिल

१०. आधारशिला – त्रैमासिक

११. पहल त्रैमासिक

१२. परिचय-प्रवेशांक – अद्र्ववार्षिक

१३. सत्य शोधक - दलित विमर्श पत्रिका

१४. कंचनलता - त्रैमासिक पत्रिका

१५. राजस्थान पत्रिका - दैनिक-पत्रिका

१६. दैनिक भास्कर - दैनिक पत्रिका

१७. दैनिक अंबर - दैनिक पत्रिका

१८. दैनिक नवजागरण - दैनिक पत्रिका

१९. पत्रकार सदन – त्रैमासिक

२०. अर्थात - त्रैमासिक इत्यादि

शब्द-कोश

- हिंदी - शब्द-कोश – २००० – डॉ. द्वारका प्रसाद, सहयोग संतोष ।
- वृहत - हिंदी - शब्द-कोश - सम्पादक - कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुंदी लाल श्रीवास्तव ।